ANCHOR

# नाट्य संगीत से जीवंत हुई परंपरा

## मराठी संगीत नाटक मत्सयगंधा का मंचन

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

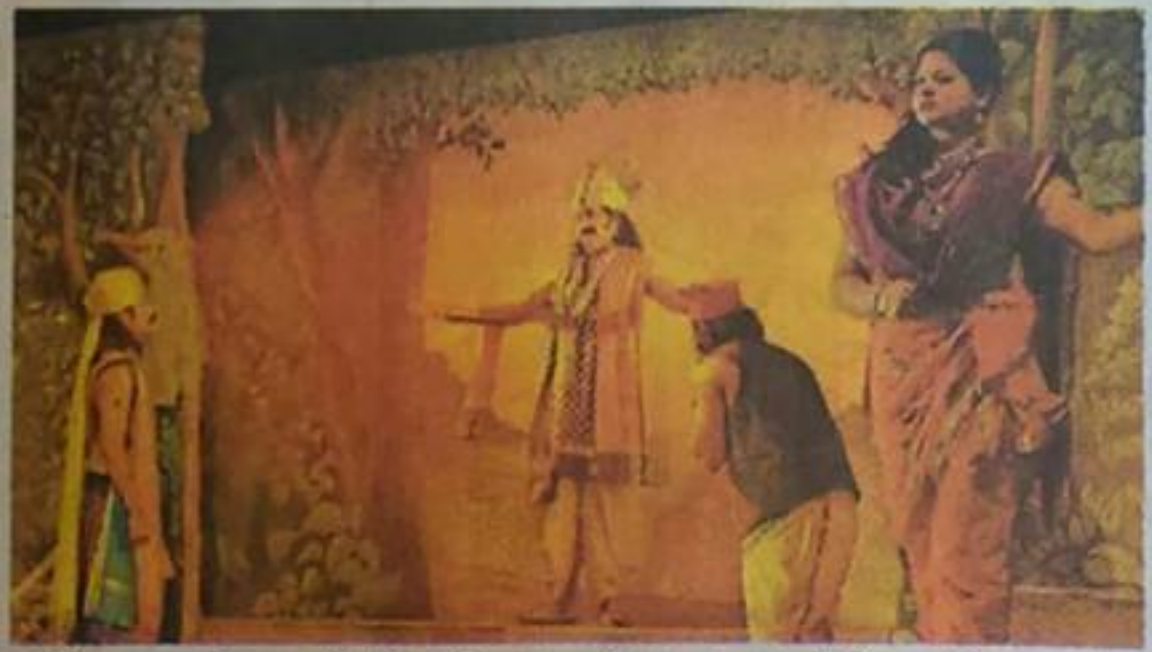

इंदौर ● इंदौर एक जमाना था जब मराठी में संगीत नाटकों की धूम हुआ करती थी और नाटक दो-तीन घंटे के नहीं बल्कि रात भर चलते थे। नाटकों में बेहद मीठे सुरीले गीत हुआ करते थे और उन्हीं के कारण मराठी में नाट्य संगीत एक विधा की तरह विकसित हुआ। वक्त बदला और मनोरंजन के साधनों में परिवर्तन हुए और नाटकों की अवधि कम होती गई और धीरे- धीरे संगीत नाटक भी कम होते-होते बंद से हो गए। 1964 में मत्स्यगंधा नाटक ने इस परंपरा को फिर से जीवित किया गोवा में दत्ताराम ने जब उन्होंने वसंत कानिटकर लिखित नाटक मत्स्यगंधा को संगीत नाटक के रूप में मंचित किया। इस नाटक के लिए पं. जितेंद्र अभिषेकी ने विशेष रूप से गीत संगीतबद्ध किए थे। इस नाटक को करीब 50 बरस बाद फिर प्रस्तुत किया है अनंत पणशीकर ने और वही नाटक शनिवार की शाम सानंद न्यास के दर्शक समूहों के लिए यूनिवर्सिटी ऑडिटोरियम में मंचित किया गया। निर्देशन किया संपदा जोगलेकर ने जो मराठी रंगमंच का जानीमानी हस्ती है।

नाटक का नाम संगीत मत्स्यगंधा रखा गया और इसमें कथा सूत्र महाभारत से लिए गए है। कहानी में ऋषि पाराशर का सत्यवती पर मुग्ध होना और फिर छोड़ कर जाना, सत्यवती का भोलापन, शांतनु की लालसा, पिता के लिए भीष्म का समर्पण और उनकी प्रतिज्ञा, अंबे का प्रतिशोध सहित मानवीय प्रकृति के अनेक पहलू इस कथा में गुंथे हुए है। वसंत कानिटकर ने महाभारत से प्रसंग लिए है पर उन प्रसंगों को मौलिक रूप से लिखा है।

50 बरस पुराने नाटक को संपदा जोगलेकर ने नए दर्शकों के मुताबिक रोचक बनाने की कोशिश की है। संगीत पं. जितेंद्र अभिषेकी के सहयोगी रहे अशोक पत्की का है और उन्होंने पं. अभिषेकी के संगीतबद्ध गीतों को मूल स्वरूप में ही रखा है। नाटक की जान उसका संगीत ही है जिसके कारण दर्शक मंत्रमुग्ध हुए। मुख्य भूमिकाओं में थे केतकी चैतन्य, नचिकेत लेले, पूजा रायबागी, शशि गंगावणे, संजीव ताडेल, अमोल कुलकर्णी और राहुल मेहेंदले।